'कन्या' लग्न

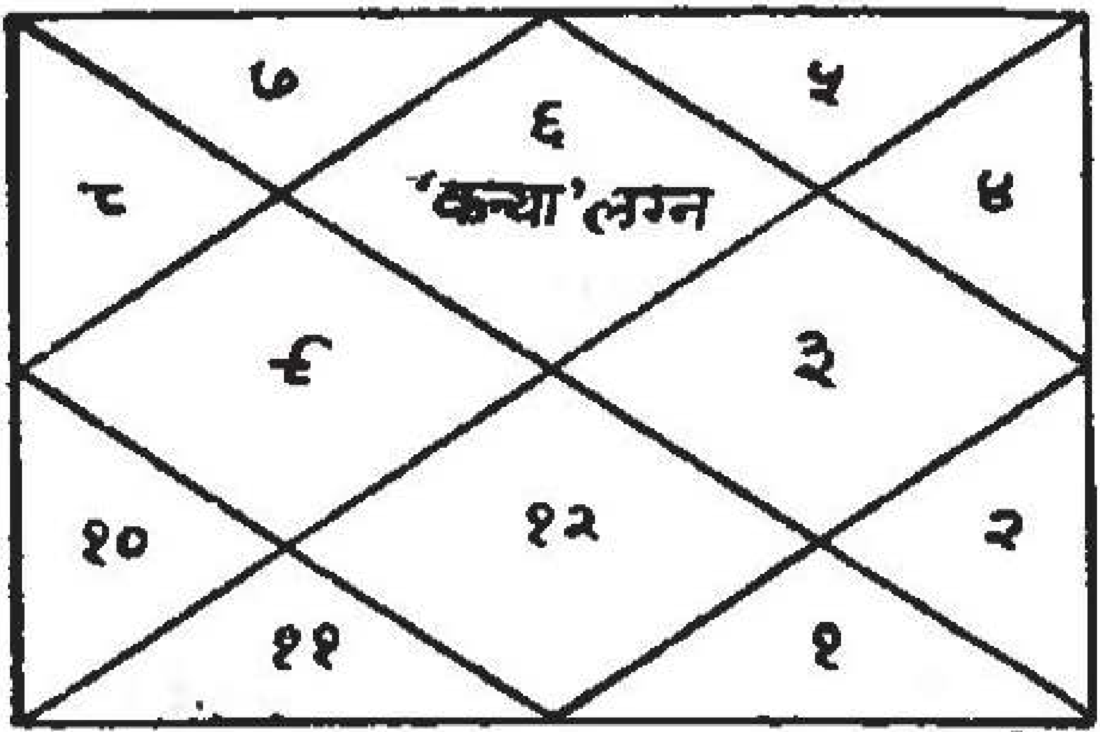

९६०

['कन्या' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न ग्रहों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'कन्या लग्न' का फलादेश

'कन्या' लग्न में जन्म लेने वाले जातक का शरीर सामान्य अथवा स्थूल और सुन्दर होता है। इसकी आँखें बड़ी-बड़ी होती हैं। यह कफ एवं पित्त प्रकृतिवाला, सत्यभाषी, प्रियवादी, गंभीर, भावुक-मिजाज, अपने मन की बात को छिपाने वाला, सदैव प्रसन्न रहने वाला, चतुर, काम-क्रीड़ा-कुशल, मायावी, क्रोधी, विचारशील, डरपोक, यात्रा-प्रेमी, गणितज्ञ, धर्म में रुचि रखने वाला तथा अनेक प्रकार के गुणों तथा कला-कौशलों से युक्त होता है।

इसे सुन्दर स्त्री प्राप्त होती है तथा कन्या-सन्तति अधिक होती है। यह भ्रातृ-द्रोही तथा स्त्री द्वारा पराजित भी होता है।

इस लग्न वाला जातक बाल्यावस्था में सुखी, मध्यमावस्था में सामान्य तथा अन्तिमावस्था में दुःख भोगने वाला होता है। इसका भाग्योदय २४ से ३६ वर्ष की आयु के बीच होता है। इसी अवधि में यह अपने धर्म तथा ऐश्वर्य की वृद्धि करता है, परन्तु यह अन्त तक नहीं टिक पाता।

'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६१ से ७६८ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'कन्या' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६१ से ६७२ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों की अपनी गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६६१
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६६२
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६६३
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६६४
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६६५
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६६६
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६६७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६६८
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६६९
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६७०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६७१
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६७२

'कन्या' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६७३ से ६८४ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६७३
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६७४
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६७५
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६७६
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६७७
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६७८
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६७९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६८०
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६८१
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६८२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६८३
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६८४

'कन्या' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८५ से ६९६ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६८५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६८६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६८७
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६८८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६८९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६९०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६९१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६९२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६९३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६९४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६९५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६९६

'कन्या' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६९७ से ७०८ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६९७

(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६९८

(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६९९

(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७००

(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७०१

(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७०२

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७०३

(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७०४

(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७०५

(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७०६

(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७०७

(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७०८

'कन्या' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७०९ से ७२० के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७०९

(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७१०

(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७११

(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७१२
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७१३
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७१४
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७१५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७१६
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७१७
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७१८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७१९
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७२०

'कन्या' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२१ से ७३२ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७२१
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७२२
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७२३
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७२४
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७२५
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७२६
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७२७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७२८
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७२९
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७३०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७३१
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७३२

'कन्या' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७३३ से ७४४ के बीच देखान चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७३३
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७३४
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७३५
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७३६
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७३७
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७३८
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७३९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७४०
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७४१
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७४२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७४३
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७४४

'कन्या' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७४५ से ७५६ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७४५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७४६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७४७
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७४८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७४९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७५०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७५१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७५२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७५३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७५४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७५५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७५६

'कन्या' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७५७ से ७६८ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७५७
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७५८
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७५९
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७६०
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७६१
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७६२
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७६३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७६४
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७६५
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७६६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७६७
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७६८

'कन्या' लग्न में 'सूर्य'

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

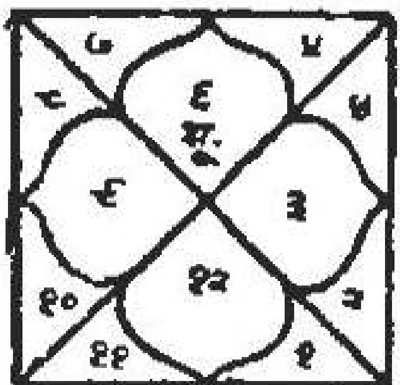

६६१

पहले भाव में जिस बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक दुर्बल शरीर वाला, खूब खर्च करने वाला तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त करने वाला होता है। परन्तु कभी-कभी खर्च के कारण उसे परेशानी उठानी पड़ती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ हानि का सामना भी करना पड़ता है तथा असन्तोष भी बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

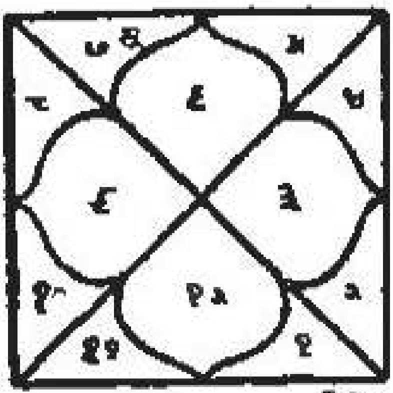

६६२

दूसरे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब की हानि होती है। बाहरी स्थानों से आर्थिक लाभ कम होता है, तथा खर्च के कारण परेशानी भी होती है।

सातवीं दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की पुरातत्त्व तथा आयु का लाभ प्राप्त होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

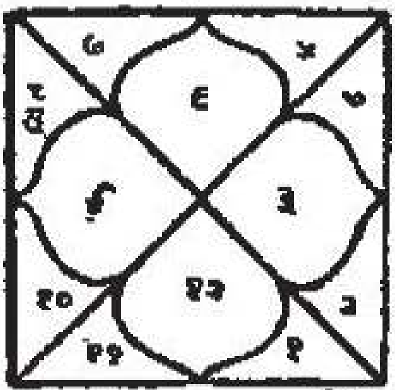

६६३

तीसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ न्यूनता आती है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ द्वारा जीवन में सफलताएँ प्राप्त करता है तथा अत्यन्त हिम्मती और प्रभावशाली होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन सामान्य ढंग से व्यतीत होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

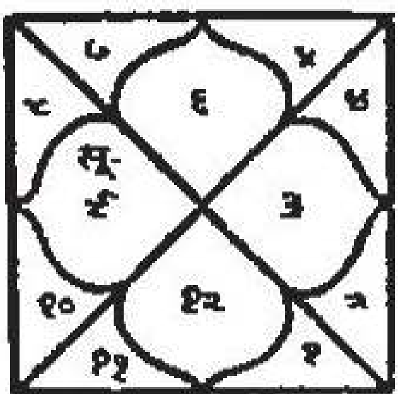

६६४

चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। उसे बाहरी स्थानों से सुख तथा खर्च के लिए धन प्राप्त होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय-पक्ष से भी कुछ असन्तोष रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : सूर्य

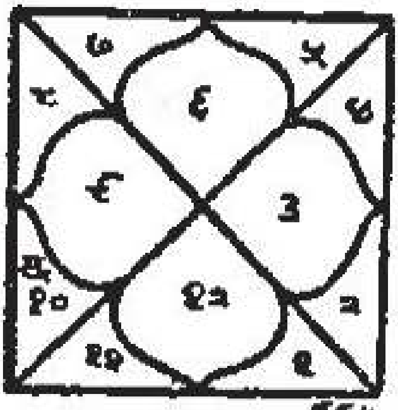

६६५

पाँचवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि तथा सन्तान में कमी रहती है तथा खर्च चलाने के लिए दिमाग में परेशानी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण सामान्य लाभ होता रहता है। ऐसा व्यक्ति चक्करदार बातें करने वाला तथा चंचल होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

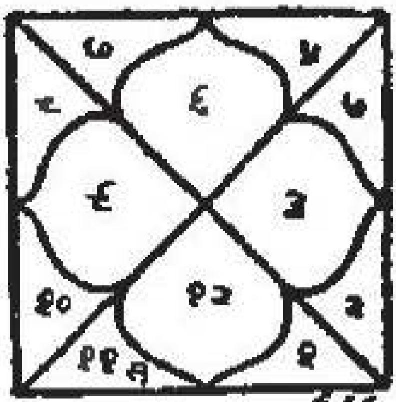

६६६

छठे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक शत्रुओं से परेशान रहता है तथा अधिक खर्च करके ही उन पर प्रभाव स्थापित कर पाता है। वह परिश्रम द्वारा अपना खर्च चलाता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सामान्य लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

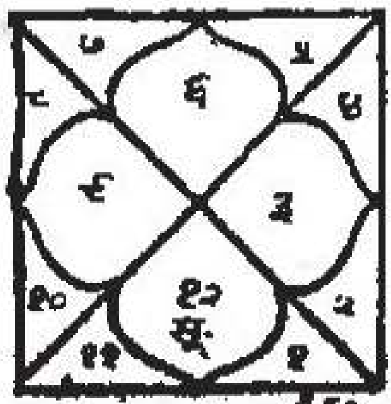

६६७

सातवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है। बाहरी स्थानों से लाभ के अतिरिक्त हानि भी होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के जातक का शरीर दुर्बल होता है तथा वह स्वभाव से चंचल, क्रोधी एवं धन की ओर से चिन्तित बना रहने वाला होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

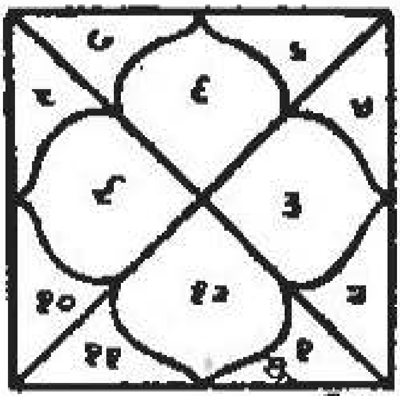

९६८

आठवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित उच्च 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातत्त्व में कुछ कठिनाइयों के साथ वृद्धि होती है। खर्च की अधिकता एवं बाहरी संबंधों से लाभ होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन की हानि होती है एवं कौटुम्बिक सुख में कमी आती है। ऐसी ग्रह-स्थिति का जातक धन के विषय में बहुत चिन्तित बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : सूर्य

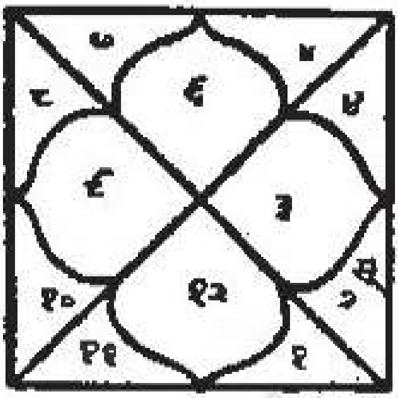

९६९

नवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी रहती है। ऐसे लोग प्रायः नास्तिक होते हैं। उन्हें बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है तथा पराक्रम की भी अधिक वृद्धि नहीं होती।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : सूर्य

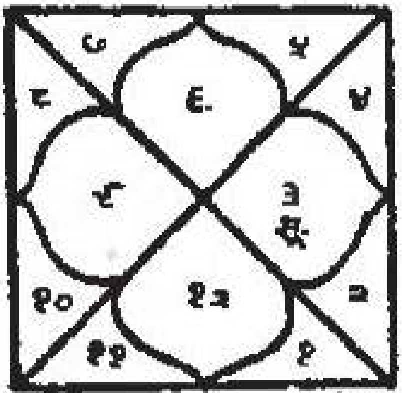

९७०

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में भी कुछ कमी बनी रहती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : सूर्य

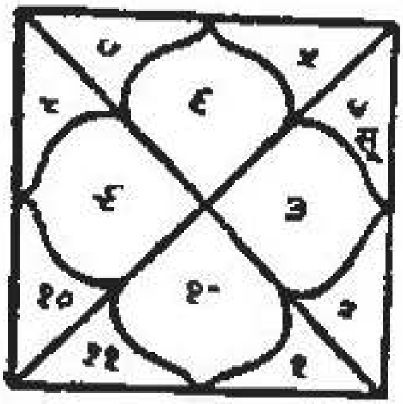

६७०

ग्यारहवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की पर्याप्त आमदनी होते हुए भी खर्च चलाने की चिन्ता बनी रहती है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से लाभ, सुख तथा सम्मान मिलता है।

सातवीं शत्रु दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का क्षेत्र भी कमजोर रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

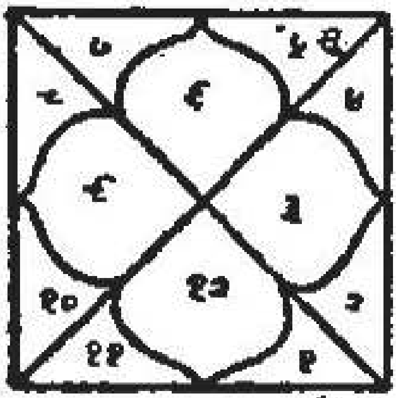

६७१

बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित सूर्य के प्रभाव जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ एवं सम्मान भी मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष एवं रोग आदि से काफी परेशानी होती है तथा खर्च भी अधिक होता है। फिर भी जातक अपना साहस बनाये रख कर शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित कर लेता है।

'कन्या' लग्न में 'चन्द्रमा'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

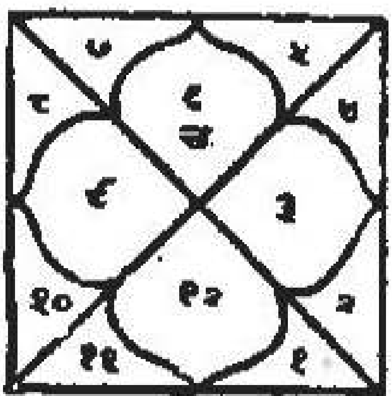

६७२

पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, प्रसन्नता एवं मनोबल का लाभ होता है। वह परिश्रम द्वारा धन तथा यश कमाता है और प्रभावशाली बनता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से सुन्दरी स्त्री मिलती है तथा स्त्री-पक्ष एवं व्यवसाय से यथेष्ट लाभ होता है।

कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

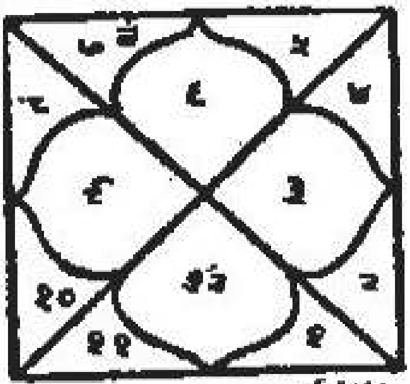
६७४

दूसरे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के धन-कुटुम्ब में वृद्धि होती है तथा धन का संचय भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से पुरातत्त्व एवं आयु में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, सम्पन्न तथा यशस्वी जीवन बिताता है।

कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

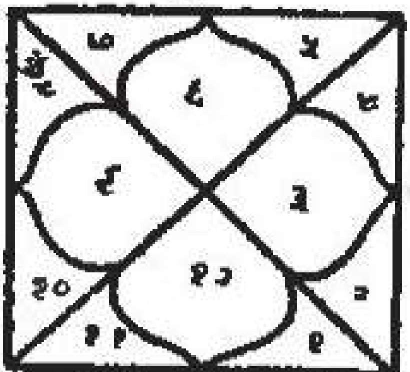
६७५

तीसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर नीच के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, धनोपार्जन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

सातवीं उच्च दृष्टि से नवमभाव को देखने से परिश्रम द्वारा भाग्योन्नति होती है तथा धर्म-पालन में भी रुचि बनी रहती है।

कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन आदि का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है और सर्वदा प्रसन्न बना रहता है।

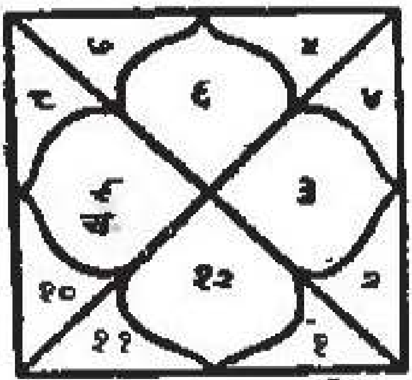
६७६

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी यश, सम्मान, सफलता, उन्नति एवं प्रभाव की वृद्धि होती है।

कन्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की सन्तान तथा विद्या-बुद्धि पक्ष की वृद्धि होती है तथा उसी के द्वारा धन-लाभ भी होता है।

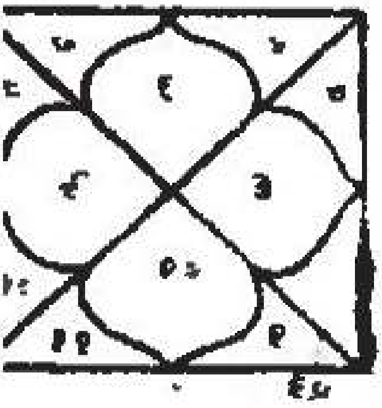
६७७

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादशभाव को देखने से आमदनी में भी वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी जीवन बिताता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

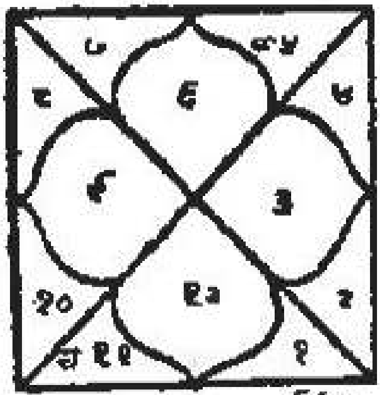

६७८

छठे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष द्वारा मानसिक अशान्ति बनी रहती है, परन्तु वह अपनी विनम्रता द्वारा शत्रु-पक्ष पर सफलता पाता है और उससे लाभ भी उठाता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी मिलता रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

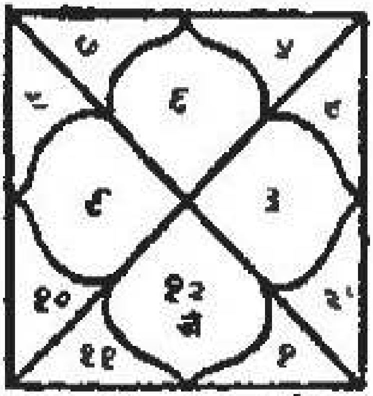

६७९

सातवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को सुन्दर पत्नी मिलती है, भोगादि के श्रेष्ठ साधन प्राप्त होते हैं तथा व्यवसाय में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, शक्ति एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक सुन्दर, स्वस्थ, सुखी तथा सम्पन्न होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

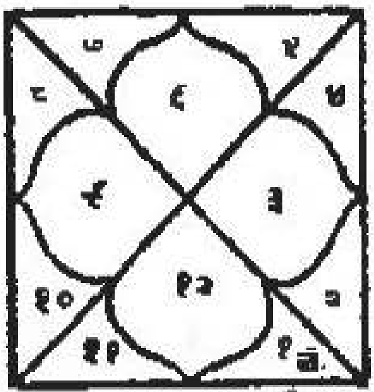

६८०

आठवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की दीर्घायु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। भाव के सातवीं में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : चन्द्र

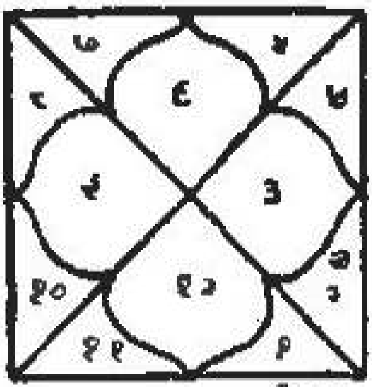

९८१

नवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को धन का यथेष्ट लाभ होता है तथा आकस्मिक दैवी सहायताएँ भी मिलती रहती हैं।

सातवीं नीच-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी आती है तथा पराक्रम की भी अधिक वृद्धि नहीं हो पाती।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : चन्द्र

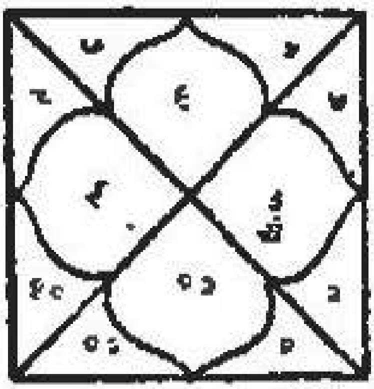

९८२

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' से प्रभाव से जातक को राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष से पूर्ण लाभ तथा सम्मान मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से भूमि, भवन तथा माता का सुख भी पर्याप्त मिलता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : चन्द्र

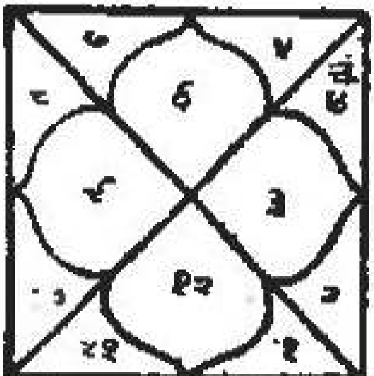

९८३

ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है और वह अपने मनोबल द्वारा पर्याप्त धन कमाता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या में कमी रहती है तथा सन्तानों से वैमनस्य रहता है, परन्तु वह अपनी चतुराई द्वारा अन्य क्षेत्रों में उन्नति करता रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

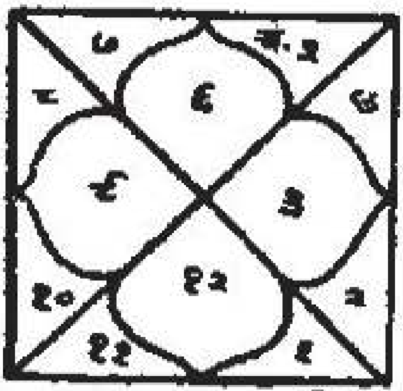

६२५

बारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से पर्याप्त लाभ भी होता है। खर्च के कारण कभी-कभी मन में चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में धन के खर्च एवं विनम्रता से सफलता मिलती है। बीमारी तथा अन्य झगड़ों में भी खर्च होता है।

'कन्या' लग्न में मंगल

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : मंगल

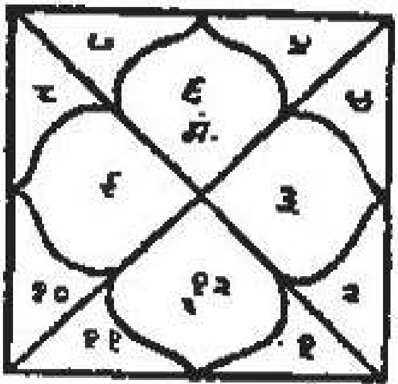

६२४

पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। चौथी मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी आती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। आठवीं दृष्टि से स्वराशि के अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन संघर्षपूर्ण रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : मंगल

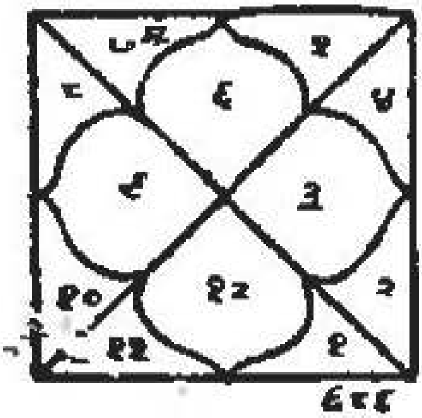

६२६

दूसरे भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है। परन्तु धन का लाभ होता है। चौथी उच्च दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में प्रयत्न करने से लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। नवीं शत्रु-दृष्टि से देखने से धर्म-पालन तथा भाग्योन्नति में कुछ कमियाँ बनी रहती हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : मंगल

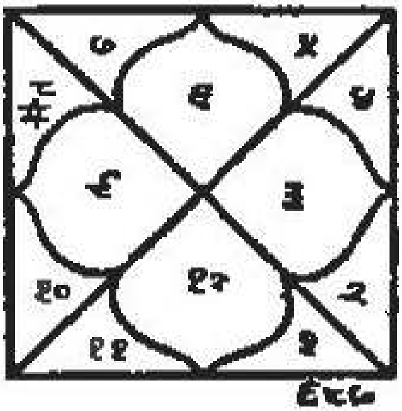

तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित व्ययेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है।

चौथी शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव के देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में कठिनाइयाँ आती हैं। आठवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक परिश्रम करने पर भी थोड़ी सफलता मिलती है तथा पिता का सुख भी कम ही रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : मंगल

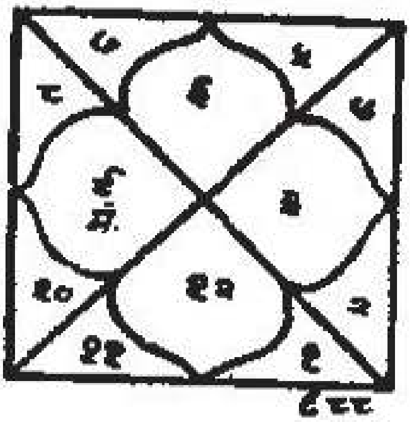

चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ होता है।

चौथी मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

आठवीं नीच-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ के मार्ग में रुकावटें आती हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : मंगल

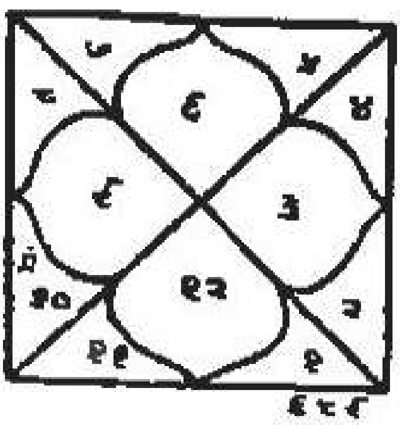

पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान-पक्ष की शक्ति तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति बढ़ती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आय के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा प्रभाव बढ़ता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : मंगल

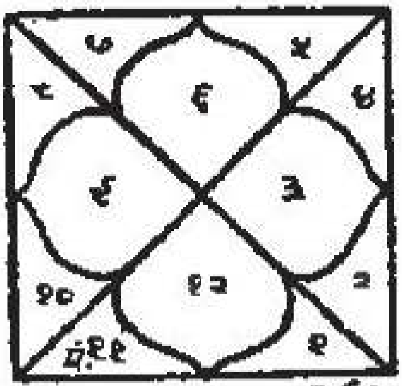

६६०

छठे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर विजय पाता है। वह परिश्रमी तथा पुरुषार्थी होता है, परन्तु भाई-बहिनों में कुछ विरोध रहता है। आयु तथा पुरातत्त्व का अच्छा लाभ होता है।

चौथी शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कमजोरी रहती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक स्वास्थ्य में कमी तथा रक्त-विकार आदि रोग रहते हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : मंगल

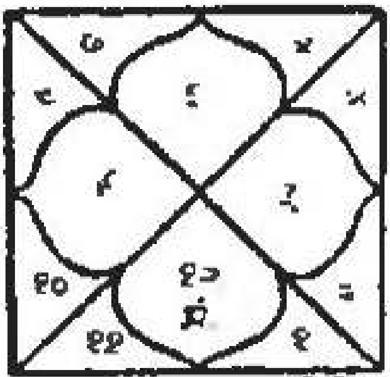

६६१

सातवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कष्ट मिलता है तथा आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिनों के सुख में न्यूनाधिकता बनी रहती है।

चौथी मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में कुछ परेशानियाँ रहती हैं। आठवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी बनी रहती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : मंगल

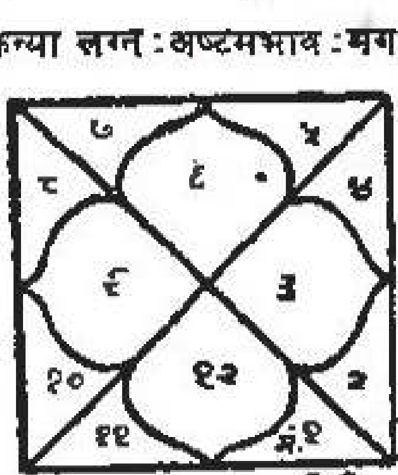

६६२

आठवें भाव में स्वराशि में स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। चौथी नीच दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ असंतोष रहता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि के तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है तथा गुप्त हिम्मत बढ़ती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : मंगल

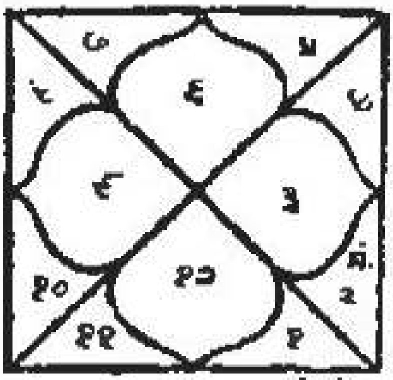

६८३

नवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कुछ कमी आती है तथा आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। चौथी मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ भाई-बहिनों का सुख मिलता है। आठवीं मित्र दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से कुछ कमी के साथ माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है। सामान्यतः जीवन शानदार बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : मंगल

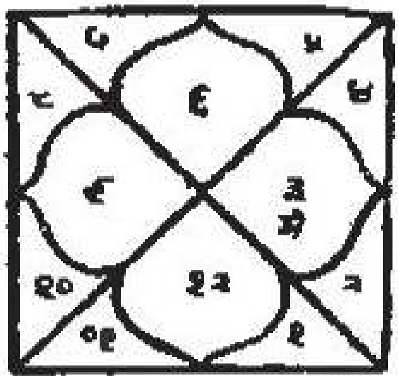

६८४

दसवें भाव में शत्रु 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है।

चौथी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर विकार-ग्रस्त रहता है, जब कि हिम्मत बढ़ी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। आठवीं उच्चदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि की पर्याप्त वृद्धि होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : मंगल

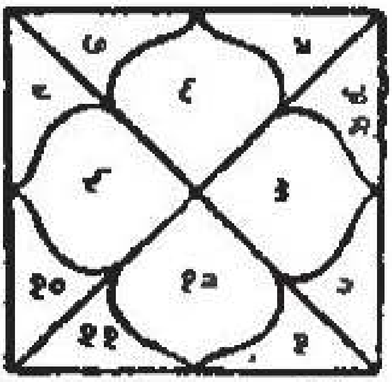

६८५

ग्यारहवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को लाभ के क्षेत्र में कुछ कठिनाई आती है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कमी आती है। सातवीं उच्च दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या एवं बुद्धि की उन्नति होती है तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

आठवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा जातक बड़ा हिम्मती, बहुत बोलने वाला तथा बहादुर होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : मंगल

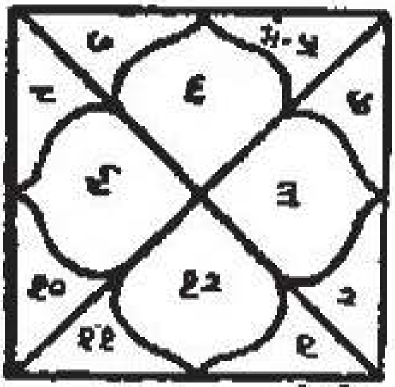

६९६

बारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से कुछ शक्ति भी मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं। चौथी दृष्टि से स्वराशि वाले तृतीयभाव को देखने से पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में सामान्य वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद प्रभाव स्थापित हो पाता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री पक्ष में कुछ कठिनाई रहती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम तथा कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है।

'कन्या' लग्न में 'बुध'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : बुध

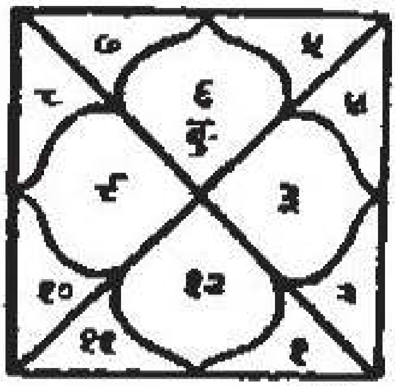

६९७

पहले भाव में स्वराशि-स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के शरीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है। राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक आय के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अत्यधिक स्वाभिमानी होता है, इस कारण व्यवसाय में अधिक उन्नति नहीं कर पाता।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : बुध

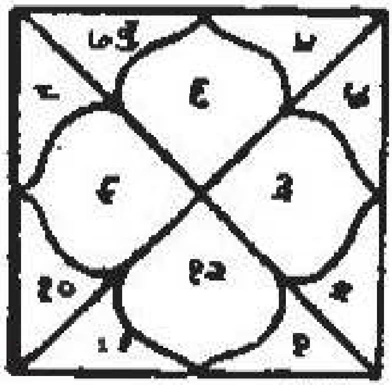

६९८

दूसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख में वृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है।

ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन ऐश्वर्यशाली होता है। वह धनी तथा सुखी भी रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : बुध

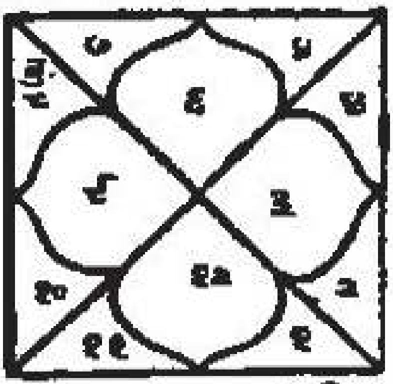

६९९

तीसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। राज्य, व्यवसाय तथा पिता के पक्ष में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है।

ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, धर्मात्मा, यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : बुध

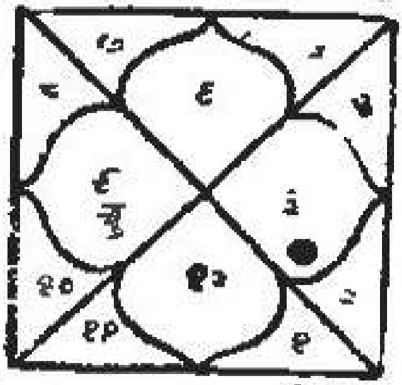

७००

चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। शारीरिक सौन्दर्य तथा सुख में भी वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादशभाव को देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सब प्रकार की सफलताएँ प्राप्त होती हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : बुध

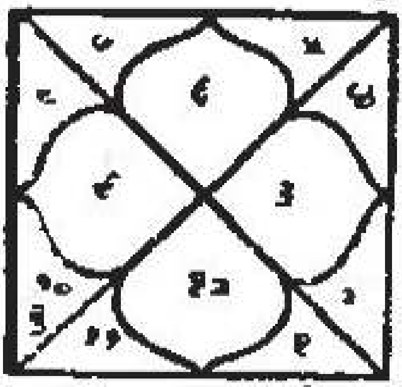

७०१

पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का पर्याप्त सुख मिलता है और उच्च पद की प्राप्ति होती है।

सातवीं समदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ वृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

ऐसा व्यक्ति सुन्दर, सुखी, धनी तथा स्वाभिमानी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : बुध

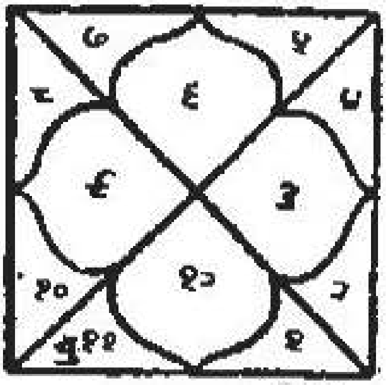

७०१

छठे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में विवेक एवं युक्तियों के द्वारा सफलताएँ मिलती हैं। ननसाल-पक्ष से भी लाभ होता है। परन्तु शारीरिक सौन्दर्य तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से अच्छा लाभ एवं सुख प्राप्त होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : बुध

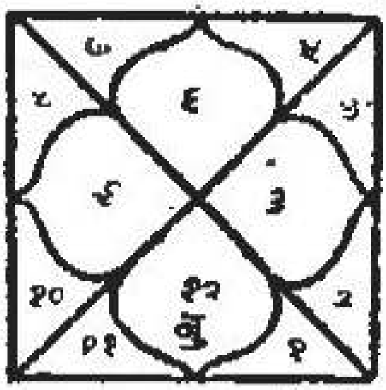

७०२

सातवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक अपनी पत्नी के व्यक्तित्व के समक्ष स्वयं को कुछ हीन-सा अनुभव करता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिन परिश्रम करना पड़ता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलताएँ प्राप्त होती हैं।

सातवीं उच्चदृष्टि से स्वराशि वाले प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं मानसिक सुख-शान्ति में भी कुछ कमी रहती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : बुध

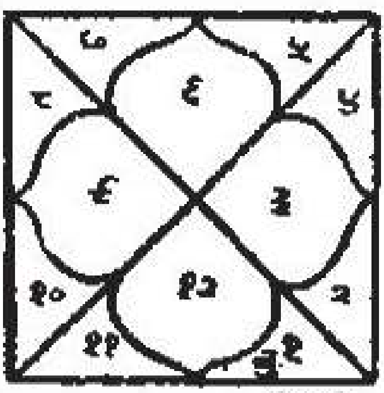

७०३

आठवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। बाहरी सम्बन्धों से आजीविका चलती रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण गुप्त युक्तियों के आश्रय से धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब से प्रेम रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : बुध

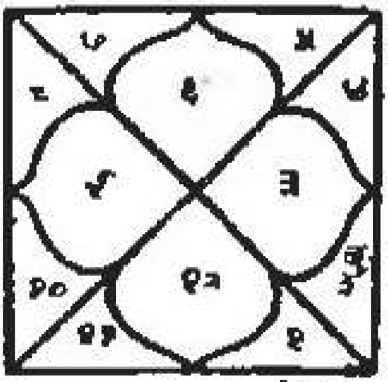

७०५

नवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है तथा राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सज्जन, सुखी, यशस्वी तथा धनी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्यालग्न : दशमभाव : बुध

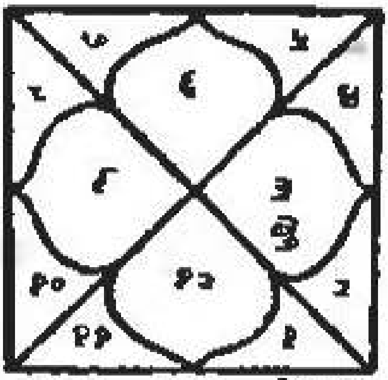

७०६

दसवें भाव में स्वक्षेत्री 'बुध' के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर, यशस्वी, स्वाभिमानी तथा सुखी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन आदि का सुख भी पर्याप्त उपलब्ध होता है। घरेलू जीवन सुख, शान्ति तथा ऐश्वर्य से पूर्ण रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादश भाव : बुध

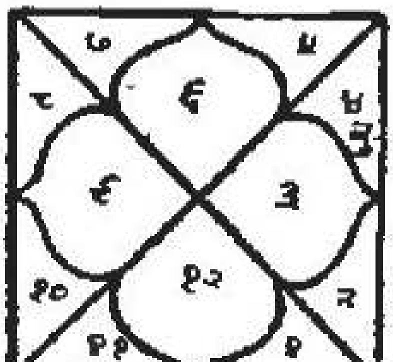

७०७

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ प्राप्त होती हैं। शारीरिक सौन्दर्य, मनोबल एवं सुख में भी वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में भी विशेष उन्नति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, विद्वान् तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्यालग्न : द्वादशभाव : बुध

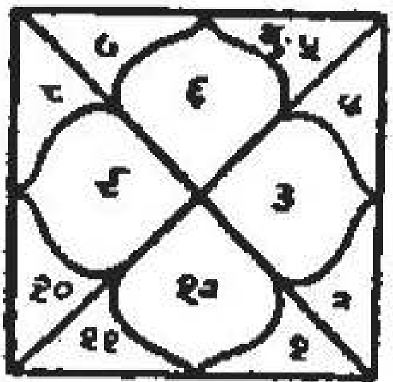

७०८

बारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। परन्तु पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में असन्तोष रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति दूरदर्शी, विवेकी तथा बुद्धिमान् होता है।

'कन्या' लग्न में 'गुरु'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्यालग्न : प्रथमभाव : बुध

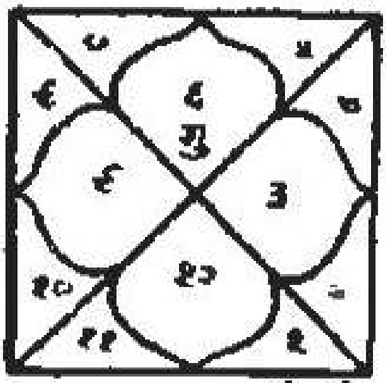

७०९

पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। पाँचवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती रहती हैं। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख मिलता है। नवीं समदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति एवं धर्म के क्षेत्र में बाधाएँ आती रहती हैं। परन्तु ऐसा व्यक्ति सज्जन तथा धनी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्यालग्न : द्वितीयभाव : बुध

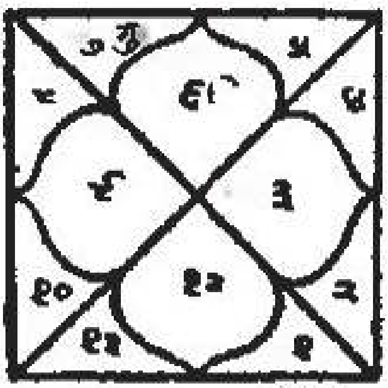

७१०

दूसरे भाव में सामान्य शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को धन, कुटुम्ब का सुख मिलता है, परन्तु माता एवं स्त्री के सुख में कुछ बाधाएं आती हैं जबकि व्यवसाय-पक्ष की उन्नति होती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्यालग्न : तृतीयभाव : गुरु

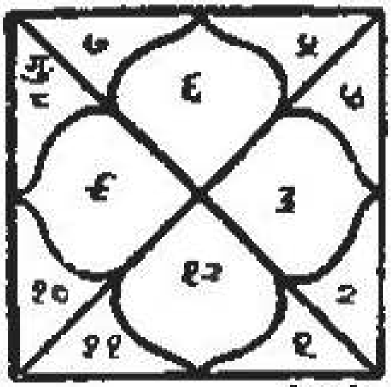

७११

तीसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है और माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी सफलताएँ मिलती हैं। स्त्री सुन्दर मिलती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ रुकावटों के साथ उन्नति होती है। नवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है। ऐसा जातक धनी तथा सुखी रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली से 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्यालग्न : चतुर्थभाव : गुरु

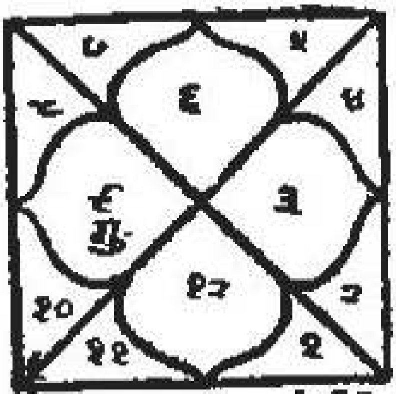

७१२

चौथे भाव में स्वक्षेत्री 'गुरु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

पाँचवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएं मिलती रहती हैं। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में लाभ मिलता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्यालग्न : पंचमभाव : गुरु

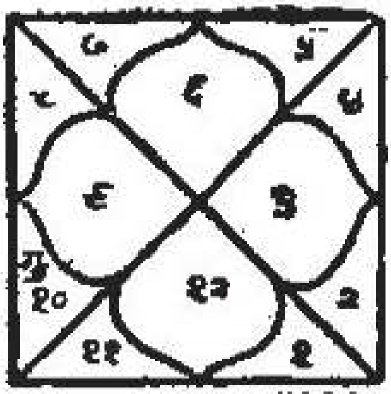

७१३

पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर नीच के गुरु के प्रभाव से जातक की सन्तान पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि में कमी रहती है। मातृ-पक्ष भी कमजोर रहता है। पाँचवी शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म की सामान्य वृद्धि होती है। सातवीं उच्च-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी में वृद्धि होती है तथा नवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक, शक्ति, सम्मान, प्रभाव एवं कार्य-कुशलता में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी तथा सामान्य धनी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : गुरु

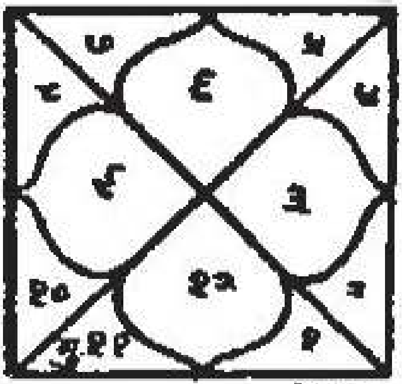

७१४

छठे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में नम्रता से काम निकालता है। माता, भूमि एवं भवन के सुख में भी कमी रहती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ सफलताओं, सुख तथा यश की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। नवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है तथा धन-संचय के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : गुरु

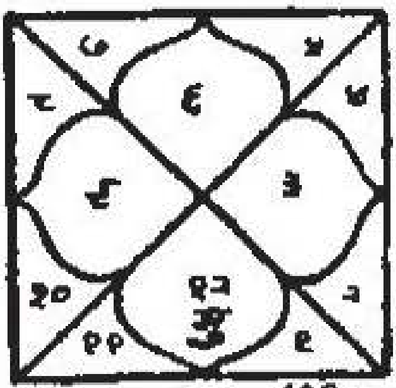

७१५

सातवें भाव में स्वक्षेत्री 'गुरु' के प्रभाव से जातक को स्त्री एवं व्यवसाय-पक्ष में पर्याप्त लाभ मिलता है। माता, भूमि तथा मकान का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। पाँचवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी में बहुत वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक-सुख, मान एवं सौन्दर्य की प्राप्ति होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख एव पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : गुरु

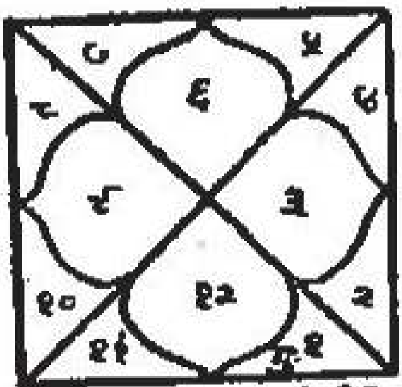

७१६

आठवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है। परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के सुख में कुछ कमी आती है।

पाँचवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी आती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ परेशानियों के साथ मिलता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : गुरु

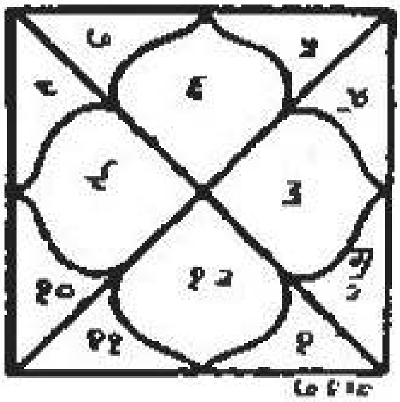

नवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कमी रहती है, परन्तु माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से सुख-सम्मान की वृद्धि होती है तथा भोगेच्छा प्रबल रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। नवीं नीच-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कमजोरी आती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : गुरु

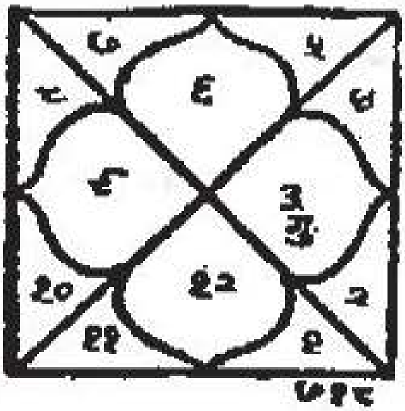

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय से लाभ होता है। स्त्री सुन्दर तथा प्रभावशाली मिलती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन, कुटुम्ब का सामान्य लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि अपनी राशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है।

नवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष में शान्ति-नीति से विजय मिलती है तथा उससे लाभ भी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : गुरु

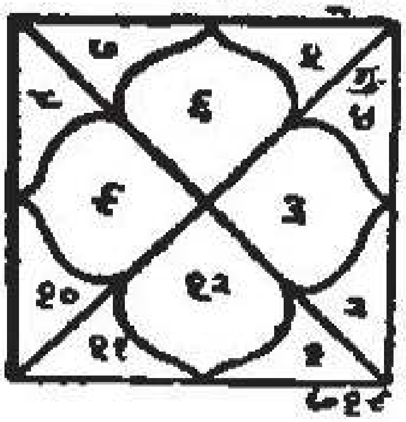

ग्यारहवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आमदनी बढ़ती है तथा माता, भूमि एवं मकान का यथेष्ट सुख भी मिलता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम एवं भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से परेशानी रहती है तथा विद्या-बुद्धि में कमी आती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने से सुन्दर तथा योग्य पत्नी मिलती है। भोगादि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में भी उन्नति होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : गुरु

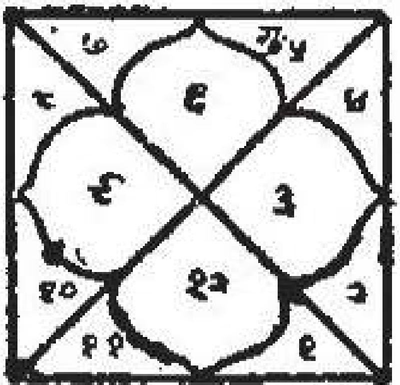

७२०

बारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ भी मिलता है। स्त्री के सुख में कमी आती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष में नम्रता से काम निकालना पड़ता है। नवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा जातक सामान्यतः सुखी जीवन बिताता है।

'कन्या' लग्न में 'शुक्र'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

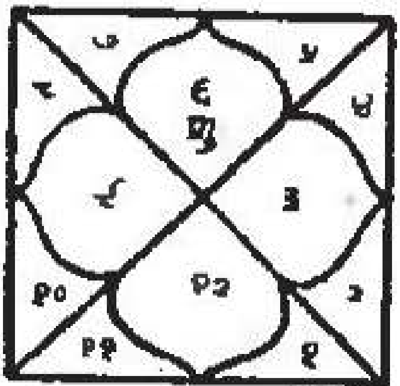

७२१

पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी रहती है और वह अधर्म-पूर्वक भी धन कमाने का प्रयत्न करता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री सुन्दर तथा भाग्यवान् मिलती है तथा व्यवसाय एवं भोगादि में भी पर्याप्त सफलता प्राप्त होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

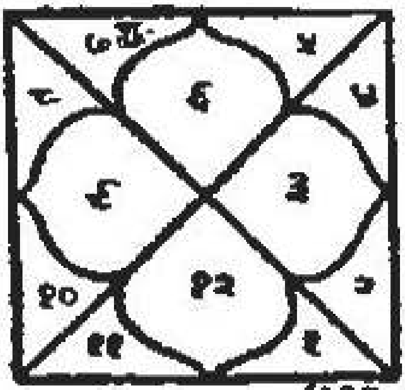

७२२

दूसरे भाव में स्वराशि स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। वह भाग्यवान्, यशस्वी तथा धर्मात्मा भी होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति चतुर, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : शुक्र

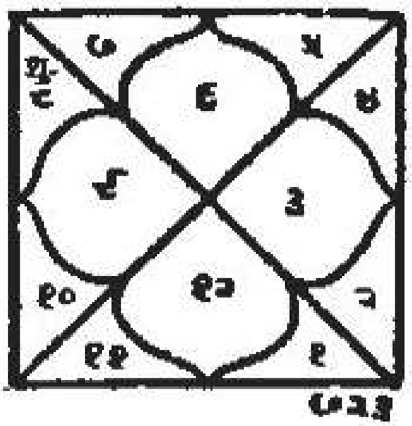

तीसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का अच्छा सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। कौटुम्बिक सुख को भी वह बढ़ाता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म में बहुत वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बहुत सुखी, धनी, धर्मात्मा तथा भाग्यशाली होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

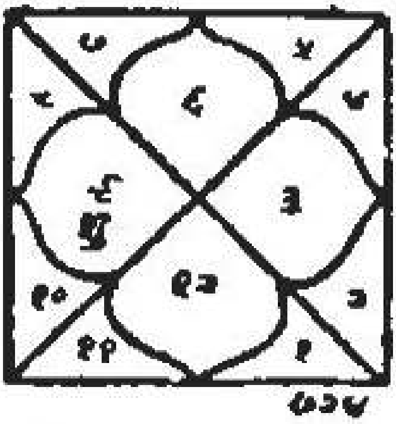

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट लाभ होता है तथा धन एवं कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धर्म का पालन भी करता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : शुक्र

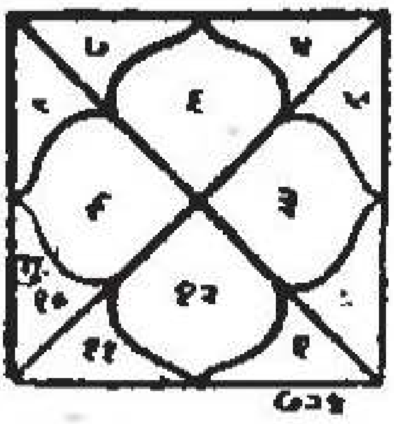

पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से श्रेष्ठ लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि की वृद्धि के साथ धन, धर्म तथा भाग्य की वृद्धि भी होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से जातक अपनी बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर आमदनी को बढ़ाता है तथा निरन्तर उन्नति करता रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

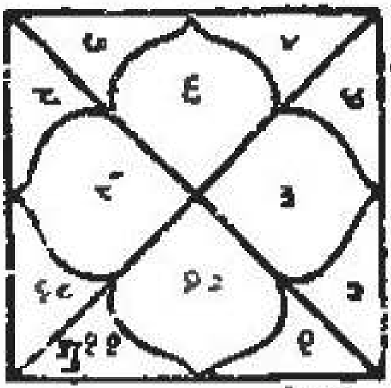

छठे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के भाग्य, धन तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी आती है तथा धर्म में भी अरुचि रहती है, फिर भी वह अपनी चतुराई द्वारा भाग्य तथा धन की वृद्धि करता है तथा परिश्रम द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलताएँ पाता है। उसे झगड़े-मुकद्दमों से भी लाभ होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : शुक्र

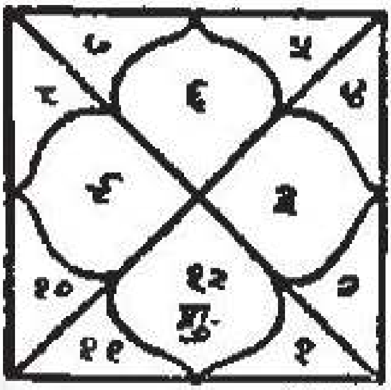

सातवें भाव में सामान्य शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति भोगी, धर्मात्मा, सुखी तथा भाग्यवान् होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य मे कुछ कमी आती है। ऐसा व्यक्ति धन-वृद्धि के लिए शारीरिक सुखों की चिन्ता नहीं करता।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

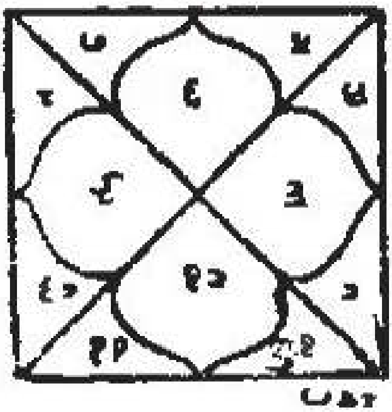

आठवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का भाग्य कमजोर रहता है तथा धन-संचय में भी कठिनाइयाँ आती हैं। धर्म का समुचित पालन भी नहीं हो पाता। पर आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं नीच दृष्टि से स्वराशि वाले द्वितीय भाव को देखने से जातक गुप्त चातुर्य एवं कठोर परिश्रम द्वारा धन-संचय करता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : शुक्र

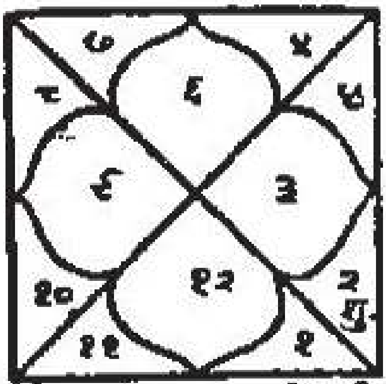

७२९

नवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक बड़ा भाग्यशाली तथा धर्मात्मा होता है। उसके धन, सम्मान तथा यश में भी वृद्धि होती है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों की शक्ति तथा पुरुषार्थ में वृद्धि होती है। साथ ही धन एवं कुटुम्ब का पूर्ण सुख भी मिलता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव

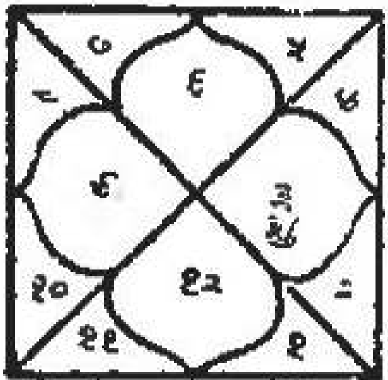

७३०

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सुख, सम्मान तथा सफलताएँ प्राप्त होती हैं। वह अपने अच्छे कर्मों से धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि करता है।

सातवीं सामान्य शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन आदि का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : शुक्र

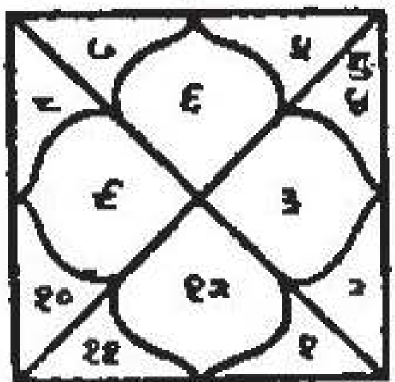

७३१

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। वह धनी, कुटुम्बवाला, धर्मात्मा, भाग्यशाली तथा न्यायी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या-बुद्धि की उन्नति होती है तथा सन्तान-पक्ष में सुख मिलता है।

ऐसा व्यक्ति प्रभावयुक्त वाणी का धनी, चतुर, निपुण, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : शुक्र

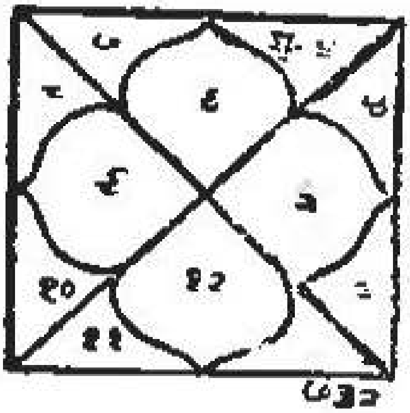

८३२

बारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, बाहरी सम्बन्धों से हानि होती है, धन-संचय नहीं हो पाता तथा भाग्योन्नति में व्यवधान पड़ता है। कौटुम्बिक सुख में भी कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष एवं झगड़े-मुकद्मों में सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

'कन्या' लग्न में 'शनि'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : शनि

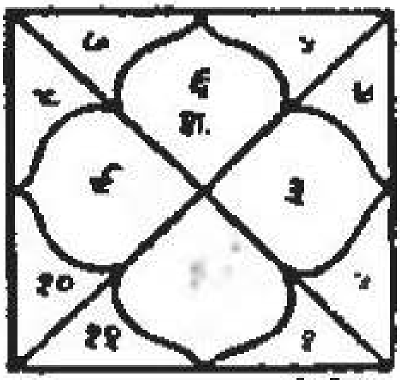

८३३

पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक का शरीर रोगी रहता है। विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का सुख प्राप्त होता है, परन्तु सन्तान से वैमनस्य रहता है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक मेहनत करनी पड़ती है। दसवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता की ओर से सामान्य परेशानी रहती है तथा राज्य एवं व्यापार के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : शनि

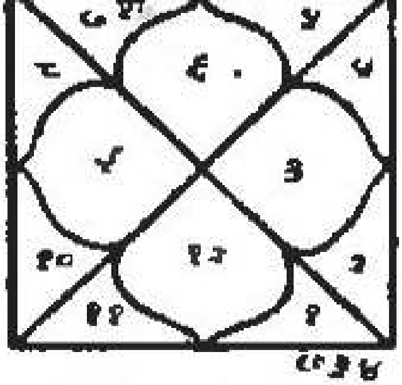

८३४

दूसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक विद्या-बुद्धि का सुख प्राप्त करता है तथा सन्तान से वैमनस्य रहता है।

तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है।

सातवीं नीच दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की कुछ हानि होती है।

दसवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति प्रत्येक क्षेत्र में संघर्षशील रहता है तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्यालग्न : तृतीयभाव : शनि

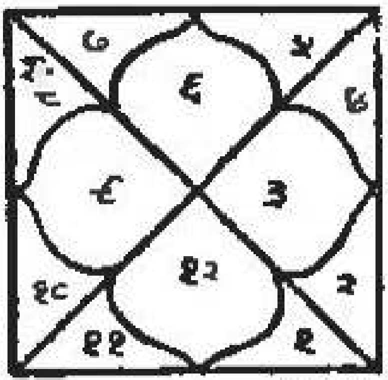

८३४

तीसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों से परेशानी रहती है, पर शत्रुपक्ष पर विजय मिलती है और पराक्रम की वृद्धि होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि के पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि का लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष में सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से परिश्रम द्वारा भाग्योन्नति होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च में कठिनाई का अनुभव होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से असन्तोष रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : शनि

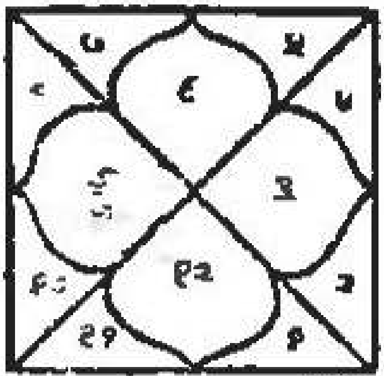

८३५

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है तथा सन्तान के पक्ष से भी परेशानी रहती है, परन्तु विद्या-बुद्धि का लाभ होता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा झगड़ों से सुख-दुःख दोनों ही मिलते हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है। दसवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से परिश्रम एवं प्रभाव की वृद्धि होती है, परन्तु शरीर कुछ अस्वस्थ बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : शनि

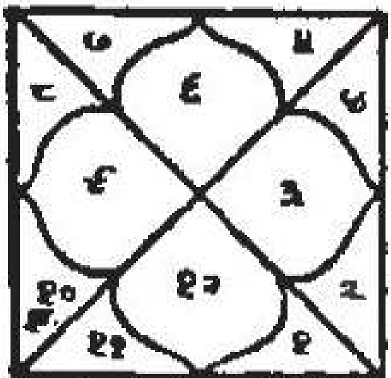

८३६

पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का लाभ होता है, परन्तु सन्तान से कुछ परेशानी भी होती है। शत्रु-पक्ष में उसे गुप्त युक्तियों से विजय मिलती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से परिश्रम द्वारा लाभ होता है। दसवीं उच्च दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति संघर्षपूर्ण सुखी-सम्पन्न जीवन बिताता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : शनि

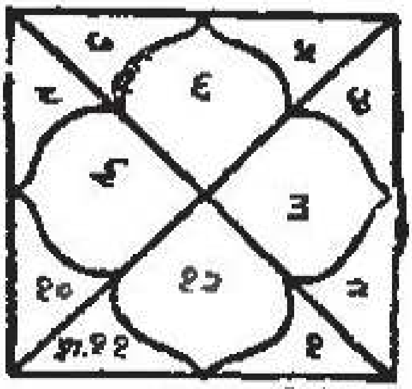

७३८.

छठे भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपने बुद्धि-बल से सफलता पाता है, परन्तु विद्या एवं सन्तान के पक्ष में सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं। तीसरी नीच दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु पर अनेक बार संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व की हानि होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च की परेशानी रहती है, तथा बाहरी सम्बन्ध भी सुखद नहीं रहते। दसवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों द्वारा कष्ट मिलता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्यालग्न : सप्तमभाव : शनि

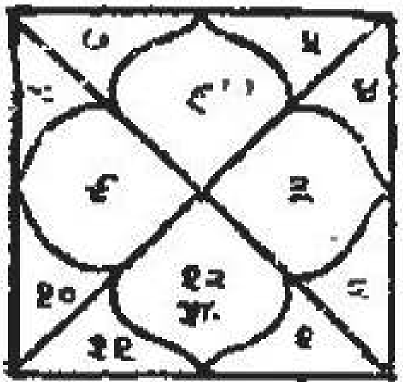

७३९

सातवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र मे कठिनाइयाँ आती हैं तथा मूत्रेन्द्रिय में विकार भी होता है। सन्तान के पक्ष से भी परेशानी रहती है, परन्तु शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से जातक बुद्धि-बल द्वारा भाग्योन्नति करता हुआ धर्म का पालन भी करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव से देखने से शरीर में रोग रहता है, परन्तु प्रभाव की वृद्धि होती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी आती है। ऐसा जातक अपने जन्म-स्थान में परेशानी का अनुभव करता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : शनि

७४०

आठवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आयु पर अनेक बार संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व की हानि होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि के दशमभाव को देखने से पिता तथा राज्य-पक्ष में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, किन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में बुद्धि-बल से सामान्य सफलता मिलती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है। दसवीं दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है। विद्या कम रहती है परन्तु चातुर्य अधिक होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्यालग्न : नवमभाव : शनि

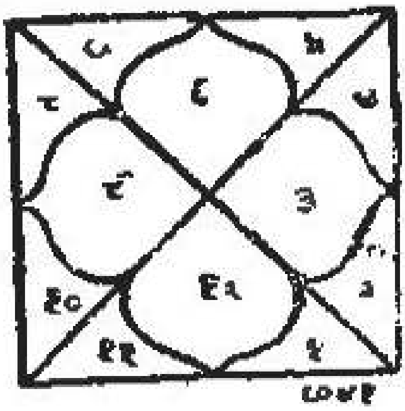

नवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक बुद्धि-बल से भाग्योन्नति करता तथा स्वधर्म का सामान्य परिपालन करता है। संतान तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि के षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में विजय मिलती है तथा झगड़ों से लाभ होता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा चतुर, नीतिज्ञ, प्रभावशाली तथा हिम्मती होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : शनि

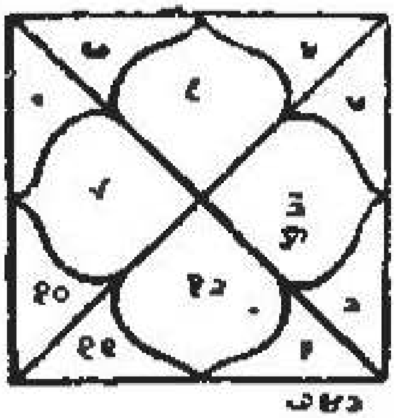

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पिता-पक्ष से परेशानी रहती है, परन्तु राज्य-पक्ष से सम्मान एवं व्यवसाय-पक्ष से लाभ होता है। विद्या तथा सन्तान का भी सुख मिलता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च के मामले में असन्तोष रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी सुखदायी नहीं रहता।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता एवं भूमि के सुख में कुछ कमी रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कमी आती है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कठिन परिश्रम से ही सफलता मिलती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : शनि

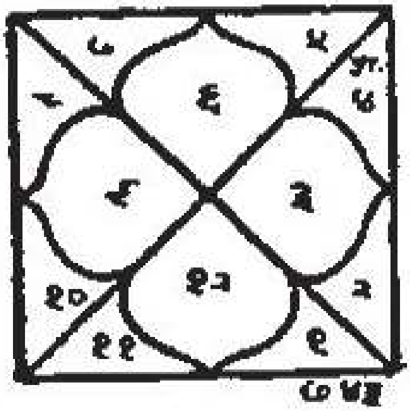

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी में खूब वृद्धि होती है तथा शत्रु-पक्ष से भी लाभ होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में रोग रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि की शक्ति प्राप्त होती है। दसवीं नीच-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से पुरातत्त्व की हानि होती है तथा आयु पर भी अनेक संकट आते हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' में स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : शनि

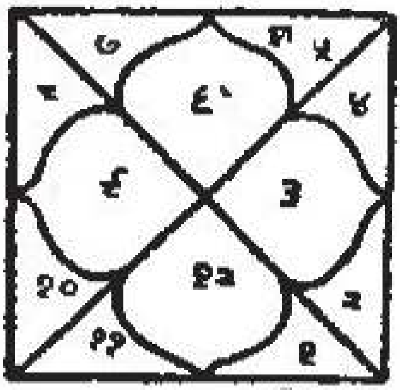

७४४

बारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से परेशानी रहती है। तीसरी उच्च-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि विशेष प्रयत्न करने से होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है, परन्तु रोगादि से कुछ कष्ट होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से बुद्धि-योग द्वारा भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म में रुचि भी रहती है। ऐसा व्यक्ति शान-शौकत में खूब खर्च करता है।

'कन्या' लग्न में 'राहु'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : राहु

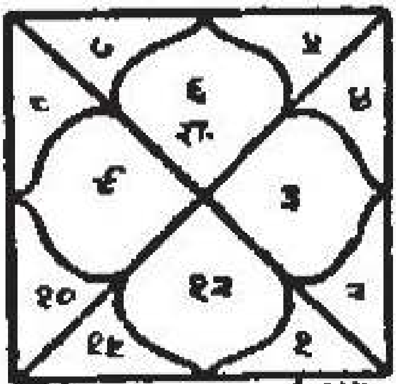

७४५

पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शारीरिक दृष्टि से शक्तिशाली, दृढ़ मनोबल वाला तथा स्वाभिमानी होता है, परन्तु कभी-कभी उसे शारीरिक कष्ट भी उठाने पड़ते हैं। वह गहरी सूझ-बूझ वाला तथा कठोर परिश्रमी होता है। मानसिक रूप से चिन्तित रहते हुए भी बड़े धैर्य से काम लेकर उन्नति करता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : राहु

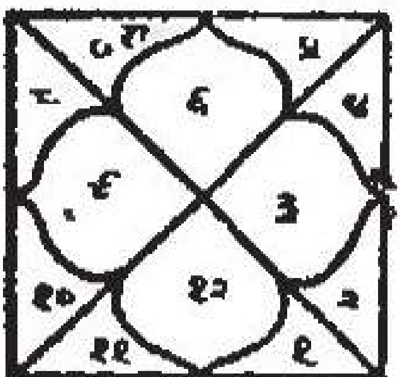

७४६

दूसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक धन-कुटुम्ब की ओर से परेशान रहता है। वह गुप्त प्रयत्न तथा कठिन परिश्रम द्वारा कुछ धन-संचय भी करता है तथा प्रकट रूप में धनवान् भी समझा जाता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक लाभ तथा हानि—दोनों ही होते हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्यालग्न : तृतीयभाव : राहु

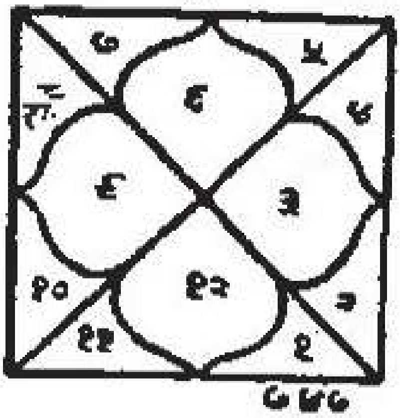

तीसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से परेशानी मिलती है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों एवं हिम्मत के बल पर सफलता प्राप्त करता है तथा स्वार्थ-सिद्धि के लिए भले-बुरे का विचार नहीं करता।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : राहु

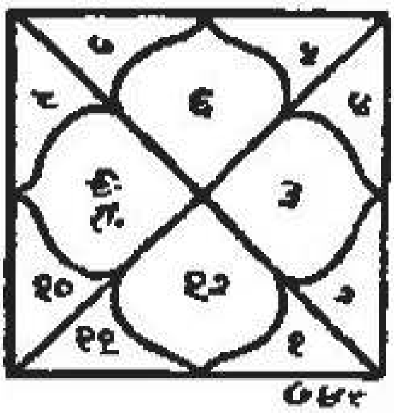

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को माता का अच्छा सुख मिलता है, परन्तु भूमि, भवन एवं घरेलू सुख में कमी रहती है। घरेलू कारणों से कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। परदेश में रहने का योग भी उपस्थित होता है। जन्म-भूमि में उसे दुःख मिलता है, परन्तु बाहरी स्थान में सुख प्राप्त होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : राहु

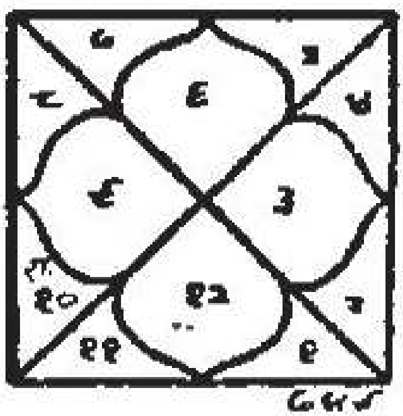

पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं।

ऐसा व्यक्ति विद्वान् न होने पर भी बातें करने में बड़ा चतुर होता है तथा अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए सत्यासत्य का विचार भी नहीं करता। कभी-कभी उसे चिन्ताएँ भी परेशान करती रहती हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्यालग्न : षष्ठभाव : राहु

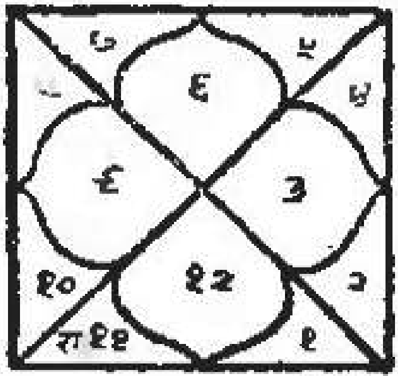

७५०

छठे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभावशाली रहता है तथा झगड़ों एवं संकटों के समय हिम्मत तथा धैर्य से काम लेकर, अपनी कमजोरी को प्रकट नहीं होने देता।

वह कठिन संकटों के समय भी विचलित नहीं होता और उन पर अपनी गुप्त युक्तियों द्वारा नियन्त्रण पा लेता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्यालग्न : सप्तमभाव : राहु

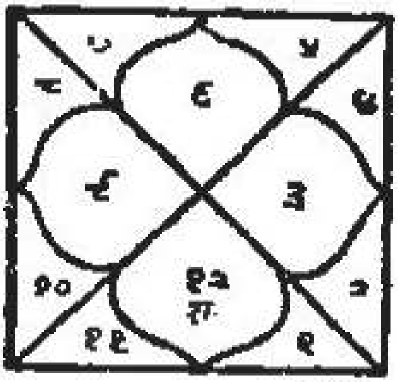

७५१

सातवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। उसको मूत्रेन्द्रिय में विकार भी हो सकता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर ही अपना काम चलाता रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्यालग्न : अष्टमभाव : राहु

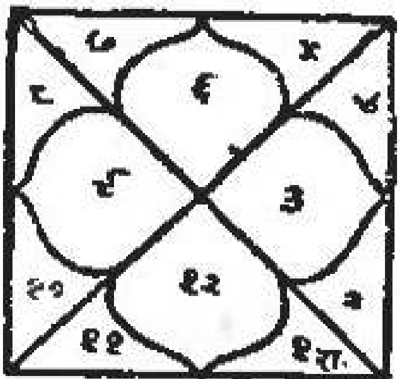

७५२

आठवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को जीवन में अनेक बार खतरों का सामना करना पड़ता है तथा मृत्यु-तुल्य कष्ट भी भोगने पड़ते हैं। उसके पेट में भी विकार रहता है।

गुप्त युक्तियों, धैर्य तथा साहस के बल पर वह आगे बढ़ता है। उसे चिन्ताएँ तथा परेशानियाँ हमेशा घेरे रहती हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्यालग्न : नवमभाव : राहु

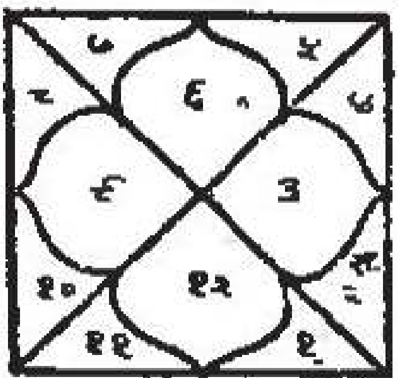

७५३

नवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक अपनी भाग्योन्नति के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा धर्म का उचित पालन नहीं कर पाता।

कभी-कभी उसे भाग्य के विषय में घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य तथा साहस के बल पर ही थोड़ी बहुत उन्नति कर पाता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : राहु

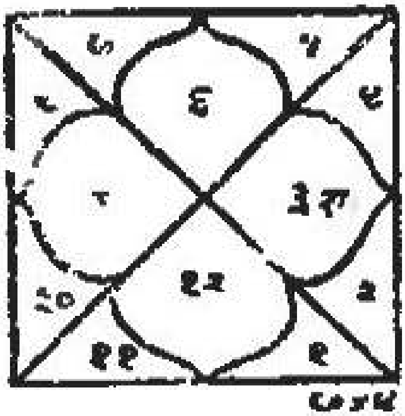

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित उच्च 'राहु' के प्रभाव से जातक अपने पिता के साथ संघर्ष करता हुआ उन्नति करता है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे गुप्त युक्ति एवं चातुर्य के बल पर ही सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। कभी-कभी संकट भी आते हैं, परन्तु फिर स्थिति ठीक हो आती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : राहु

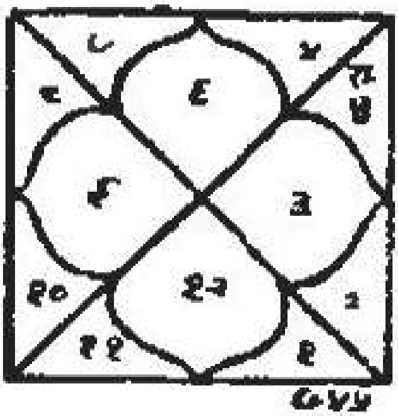

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है, परन्तु कठिनाइयों का सामना भी बहुत करना पड़ता है। उसे कभी बहुत लाभ तो कभी बहुत घाटा होता है। वह अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य, साहस तथा परिश्रम के सहारे लाभ उठाता है, परन्तु कभी-कभी धोखा भी खा जाता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : राहु

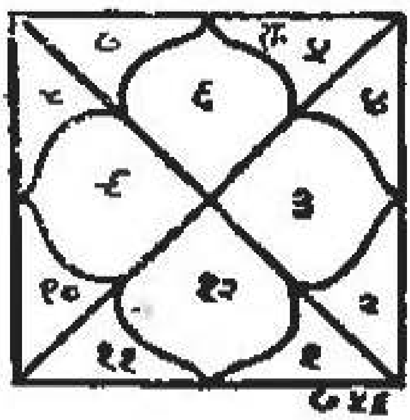

बारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को खर्च-सम्बन्धी कठिनाइयाँ बहुत रहती हैं तथा बाहरी सम्पर्कों से भी कष्ट होता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों, धैर्य, साहस तथा परिश्रम के सहारे अपना खर्च चलाता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक धन-लाभ भी हो जाता है।

'कन्या' लग्न में 'केतु'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : केतु

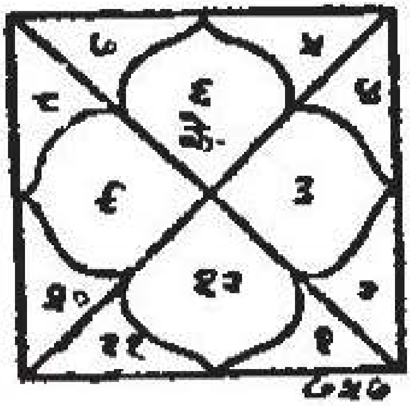

पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को शारीरिक कष्ट एवं चिन्ताओं का सामना करना पड़ता है। शरीर पर कोई गहरी चोट लगने अथवा रोग होने का योग भी बनता है। शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों वाला, हिम्मती, धैर्यवान् तथा अक्खड़ स्वभाव का होता है।

'कन्या' लग्न की कुंडली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : केतु

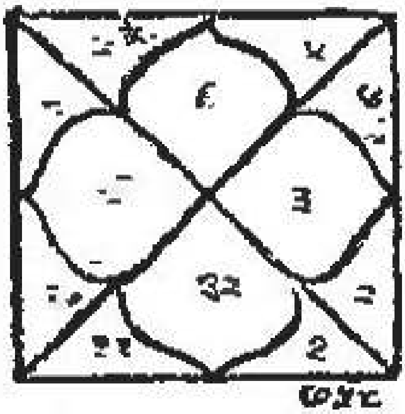

दूसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख में कमी आती है। कभी-कभी आकस्मिक धन-हानि भी होती है तो कभी-कभी आकस्मिक रूप से धन-लाभ भी हो जाता है।

ऐसा व्यक्ति धन की वृद्धि के लिए अथक परिश्रम करता है, तथा हर समय परेशान बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुंडली में 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : केतु

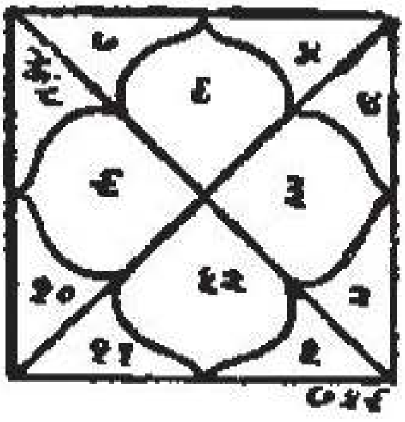

तीसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से परेशानी मिलती है।

ऐसा व्यक्ति संकट के समय भी हिम्मत नहीं हारता तथा अपने ही बाहु-बल का भरोसा रखता है। वह कठिन परिश्रमी भी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : केतु

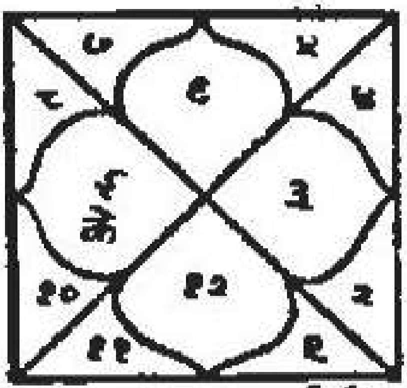

७६०

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। घरेलू जीवन ठाठदार होता है। इसके लिए उसे विशेष परिश्रम भी करना पड़ता है।

कभी-कभी घरेलू सुख में संकट भी आता है और कभी सुख में वृद्धि भी हो जाती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : पचमभाव : केतु

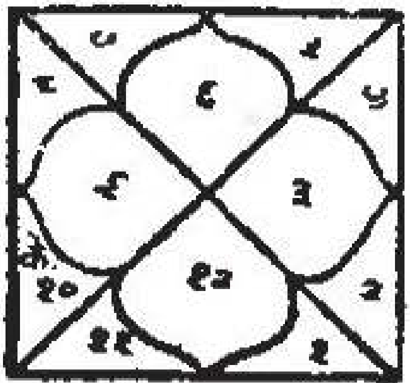

७६१

पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से चिन्ता रहती है तथा विद्या-प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी विद्या-बुद्धि में कमी को स्वयं अनुभव करता है, परन्तु फिर भी स्वयं को बड़ा समझदार तथा योग्य प्रदर्शित करता है। वह बातचीत में बड़ा तेज होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : केतु

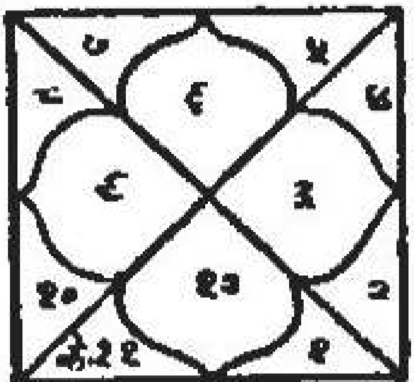

७६२

छठे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है। उसे ननसाल-पक्ष से परेशानी उठानी पड़ती है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा धैर्यवान्, गुप्त युक्तियों वाला, बहादुर, निर्भय तथा अक्खड़ स्वभाव का होता है और इन्हीं विशेषताओं के कारण अपना काम बना लेने में सफलता भी प्राप्त करता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्यालग्न : सप्तमभाव : केतु

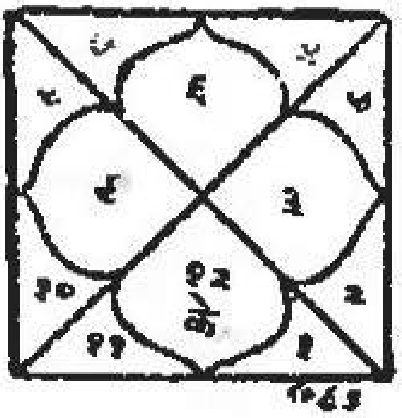

सातवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्ति, धैर्य तथा साहस के बल पर उनके निराकरण का प्रयत्न करता है। उसका गृहस्थ-जीवन बड़ी कठिनाइयों से सफल बनता है। उसकी मूत्रेन्द्रिय में विकार होने की संभावना भी रहती है।

'कन्या' लग्न की कुंडली में 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्यालग्न : अष्टमभाव : केतु

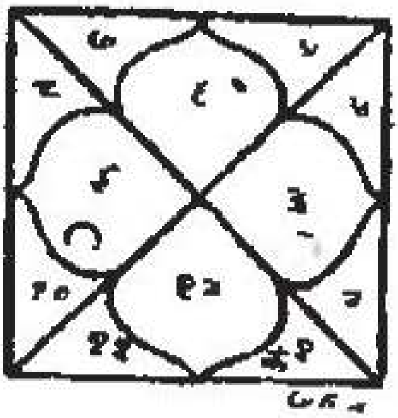

आठवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के जीवन में अनेक बार प्राणान्तक कष्ट उपस्थित होता है तथा पुरातत्व की हानि भी होती है। उसके पेट में भी विकार रहता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी, क्रोधी, धैर्यवान्, हिम्मत तथा तेजी से काम करने वाला होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्यालग्न : नवमभाव : केतु

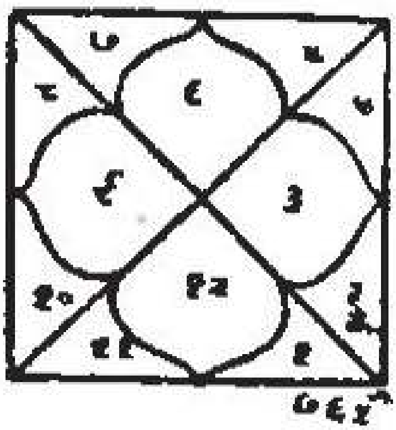

नवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की धर्म-क्षेत्र में कमी रहती है तथा भाग्योन्नति में भी बड़े संकट आते हैं।

ऐसा व्यक्ति अपने चातुर्य, गुप्त युक्तियों, बुद्धि तथा साहस के बल पर संकटों से अपनी रक्षा करता है तथा कभी-कभी विशेष चिन्तनीय स्थितियों में होकर भी गुजरता है।

'कन्या' लग्न की कुंडली में 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : केतु

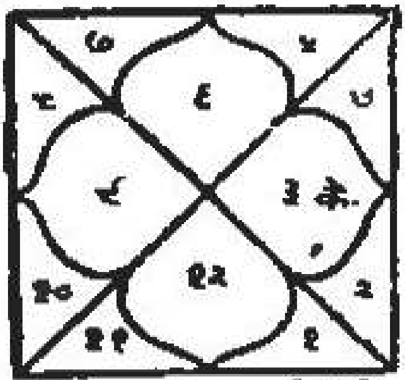

७६६

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को पिता के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक प्रभाव स्थापित नहीं होता। उसे मान-हानि, धन-हानि आदि का शिकार बनना पड़ता है। वह झगड़े-झंझट तथा परेशानियों में अक्सर फंसता रहता है।

'कन्या' लग्न की कुंडली में 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : केतु

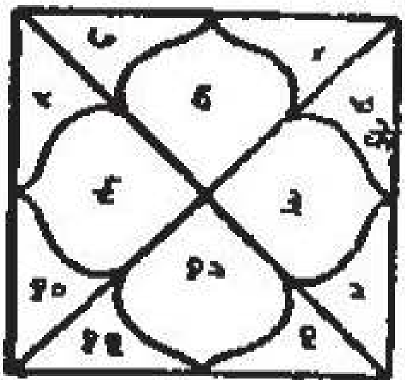

७६७

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आमदनी के साधनों में वृद्धि होती है, परन्तु उसे मानसिक-परेशानियाँ भी बहुत रहती हैं। कभी-कभी उसे संकट एवं हानि का सामना करना पड़ता है तो कभी-कभी आकस्मिक लाभ भी होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा धैर्यवान् तथा परिश्रमी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : केतु

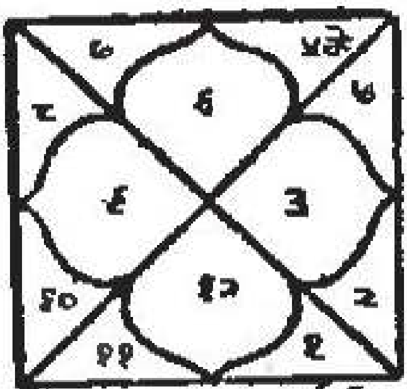

७६८

बारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को खर्च के कारण अनेक चिन्ताओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध भी कष्टकारक सिद्ध होते हैं। वह कभी-कभी संकटों का शिकार भी बनता है, परन्तु अपने धैर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर जैसे-तैसे छुटकारा भी पा लेता है।